Tender Heart High School, Sector - 33 - B, Chandigarh.

कक्षा- नौवीं

विषय- हिन्दी साहित्य

शिक्षिका- श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : साहित्य सागर

पाठ - ४ 'नेता जी का चश्मा' (कहानी) लेखक- स्वयं प्रकाश

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य पुस्तक साहित्य सागर की, पृष्ठ संख्या बीस (20) पर दिए पाठ-४ 'नेता जी का चश्मा' नामक कहानी के शेष भाग का अध्ययन करेंगे।

बच्चो! पाठ -४ के शेष भाग को समझने के लिए आप सभी अपनी-अपनी पुस्तक एवं उत्तर-पुस्तिका निकाल लें और पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। पाठ के मध्य आपसे कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे, जिनके उत्तर आप तभी दे पाएँगे यदि आप पाठ को ध्यानपूर्वक सुनोगे एवं समझोगे। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

बच्चो! पाठ को आगे समझने से पहले आइए यह जान लेते हैं कि पीछे हमने क्या पढ़ा था। लेखक स्वयं प्रकाश जी ने अपनी कहानी नेता जी का चश्मा के माध्यम से यह संदेश देने का प्रयास किया है कि देश की रक्षा के लिए प्राण न्योछावर करना ही देशभक्ति नहीं है, वरन् देश की समृद्धि व विकास के लिए कार्य करना, देशभक्त के प्रति आदर व सम्मान का भाव रखना भी देशभक्ति है। हो सकता है देशभक्ति दर्शाने के तरीके अलग हों।

हालदार साहब को कम्पनी के काम के सिलसिले में जिस

कस्बे से गुज़रना पड़ता था वह अधिक बड़ा नहीं था। उसमें कुछ ही मकान पक्के थे और एक बाज़ार था। वहाँ की नगर-पालिका कुछ न कुछ करती रहती थी। इसी के किसी बोर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की मूर्ति लगवाई। समय अथवा धन के अभाव में स्थानीय कलाकार से मूर्ति बनवाने का निर्णय किया गया और इसकी ज़िम्मेदारी हाईस्कूल के ड्राइंग मास्टर को दी गई। उन्होंने एक महीने में संगमरमर की नेताजी की मूर्ति बनाई तो टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक दो फुट ऊँची थी। मूर्ति सुन्दर थी। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो', 'तुम मुझे खून दो ---' आदि नारे याद आने लगते। मूर्ति में एक कमी थी कि नेता जी की मूर्ति पर संगमरमर के चश्मे के स्थान पर एक सामान्य और सचमुच का चौड़ा काले फ्रेम का चश्मा था। जब हालदार साहब पहली बार इस कस्बे से गुज़रे तो मूर्ति को देख सोचने लगे कि यह आइडिया भी ठीक है मूर्ति पत्थर की लेकिन चश्मा रियल। उन्हें नागरिकों का यह प्रयास सराहनीय लगा।

अगली बार जब हालदार साहब उधर से गुज़रे तो उन्होंने मूर्ति पर दूसरा चश्मा देखा और सोचा कि क्या आइडिया है। मूर्ति कपड़े नहीं बदल सकती लेकिन चश्मा तो बदल ही सकती है।

बच्चो! अब पाठ को आगे बढ़ाते हुए पृष्ठ संख्या-22 से समझना आरंभ करते हैं। कस्बे से गुज़रते समय हालदार साहब को चौराहे पर सकने, पान खाने और वहाँ लगी सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति को ध्यान से देखने की आदत पड़ गई थी। हर बार मूर्ति का चश्मा बदला होता। हालदार साहब का कौतूहल (जिज्ञासा, उत्सुकता) दुर्दमनीय (जिसे दबाना कठिन हो) हो उठा था। उन्होंने पानवाले से पूछा कि यह नेता जी की मूर्ति पर से चश्मा हर बार कैसे बदल जाता है, आखिर कौन यह चश्मा बदलता रहता है? पान वाला काला, मोटा एवं खुशमिज़ाज़ आदमी था। वह हमेशा मुँह में पान भरे रहता था। जब भी वह हँसता था तो उसका

मोटा पेट हिलता था। उसने मुँह में पान भरा था। हालदार साहब का प्रश्न सुनकर वह आँखों-आँखों में हँसा। पीछे घूमकर उसने दुकान के नीचे पान थूका और गंदे दाँतों को दिखाकर पानवाले ने बताया कि कैप्टन चश्मेवाला बदलता है। पानवाले की बात सुनकर हालदार साहब को यह बात अभी भी समझ में नहीं आई कि सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति के साथ ही बनाया गया संगमरमर का चश्मा कहाँ गया? आखिर उस चश्मे के न होने के पीछे क्या कारण था? मूर्ति के बदलते चश्मे की बात हालदार साहब समझ नहीं पा रहे थे। पानवाले ने बताया कि कैप्टन चश्मेवाला एक बूढ़ा व लँगड़ा व्यक्ति है, जो घूम-घूम कर चश्मे बेचता है। अपनी छोटी-सी दुकान में से गिने-चुने फ्रेमों में से एक फ्रेम नेता जी की मूर्ति पर लगा देता है। जब कोई ग्राहक कैप्टन से उसी चश्मे का फ्रेम माँगता है, जो नेताजी की मूर्ति पर लगा होता है तो कैप्टन वही चश्मा उतार कर ग्राहक को दे देता है और मूर्ति को दूसरा चश्मा पहना देता है। हालदार साहब ने पानवाले से फिर पूछा कि नेता जी का ओरिजनल चश्मा कहाँ गया? पानवाले ने फिर मुँह में पान भरा। वह आँखो ही आँखों में हँसा। तोंद हिलाते हुए सहज भाव से बोला मास्टर बनाना भूल गया। हालदार साहब एक भावुक व्यक्ति थे। पानवाले के लिए तो यह मज़ेदार बात थी लेकिन हालदार साहब के लिए यह चकित और द्रवित करने वाली बात थी। वे सोचने लगे कि मूर्तिकार मूर्ति बनाने के बाद यह तय नहीं कर पाया होगा कि पत्थर से पारदर्शी चश्मा कैसे बनाया जाए या फिर उसने पारदर्शी चश्मा बनाने की कोशिश की होगी मगर उसमें असफल रहा होगा अथवा बनाते-बनाते कुछ और बारीकी के चक्कर में चश्मा टूट गया होगा या पत्थर का चश्मा अलग से बनाकर फिट किया होगा और वह निकल गया होगा।

हालदार साहब को यह सोचकर बड़ा विचित्र लगा। वे चश्मे वाले की देशभक्ति के प्रति नतमस्तक हुए और

पानवाले से एक बार फिर पूछ लिया कि क्या कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का साथी है या आज़ाद हिंद फ़ौज का भूतपूर्व सिपाही ? तब पानवाले ने कैप्टन चश्मेवाले का मज़ाक उड़ाते हुए कहा कि नहीं साहब, वह लंगड़ा है, वह क्या जाएगा फ़ौज में ? पागल है पागल! वो देखो, इस तरफ़ ही आ रहा है। आप उसी से उसके बारे में पूछ लें। फिर वह हालदार साहब पर व्यंग्य करते हुए बोला कि यदि वे उससे बहुत प्रभावित हैं तो उसका फोटो छपवाकर उसकी देशभक्ति का प्रचार करवा दें।

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप तीन मिनट के लिए रूकेंगे तथा उस दौरान पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।

प्रश्न 1. क्या देखकर हालदार साहब के चेहरे पर कौतुक भरी मुसकान फैल गई ?

प्रश्न 2. कैप्टन चश्मेवाला क्या करता था ? हालदार साहब क्या नहीं समझ पा रहे थे ?

प्रश्न 3. पानवाले ने हालदार साहब को बदलते चश्मों का क्या राज़ बताया ?

बच्चो! उत्तर लिखने के लिए दी गई अवधि अब समाप्त हो चुकी है। आशा करती हूँ कि आपने उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। उन प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. हालदार साहब ने जब मूर्ति को ध्यान से देखा, तो उनके चेहरे पर कौतुक भरी मुसकान फैल गई क्योंकि मूर्ति पत्थर की थी और चश्मा सचमुच का।

उत्तर 2. कैप्टन चश्मेवाला नेता जी की मूर्ति का चश्मा बदल दिया करता था और मूर्ति के बदलते चश्मे की बात ही हालदार साहब समझ नहीं पा रहे थे।

उत्तर 3. पानवाले ने हालदार साहब को बताया कि जब कोई ग्राहक कैप्टन से उसी चश्मे का फ्रेम माँगता है, जो नेताजी की मूर्ति पर लगा होता है, तो कैप्टन वही चश्मा उतार कर दे देता है और मूर्ति को नया चश्मा पहना देता

बच्चो ! अब पाठ को आगे विस्तार से समझने का प्रयास करते हैं। हालदार साहब को इस तरह पानवाले के द्वारा एक देशभक्त का मज़ाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। हालदार साहब ने मुड़कर देखा तो हैरान रह गए। वह एक बेहद बूढ़ा आदमी था। वह अत्यंत कमज़ोर था। वह पैर से लँगड़ा भी था। उसके सिर पर एक गाँधी टोपी थी और आँखों पर काला चश्मा था। एक हाथ में छोटी-सी संदूकची थी और दूसरे हाथ में बाँस पर टँगे बहुत-से चश्मे लगे थे। हालदार साहब उस कैप्टन की उम्र और उसकी बेबसी, गरीबी और शारीरिक अपंगता को देखकर हैरान हो गए। वास्तव में उस साधारण से बूढ़े आदमी के मन में सुभाष जी के प्रति सम्मान की भावना व कैप्टन की देशभक्ति की भावना पर हालदार साहब दंग रह गए।

हालदार साहब कौतुहलवश पानवाले से उस कैप्टन के बारे में पूछना चाहते थे कि लोग उस बूढ़े एवं कमज़ोर चश्मेवाले को कैप्टन क्यों कहते हैं ? क्या कैप्टन ही उसका वास्तविक नाम है ? लेकिन अब पानवाला उस बारे में बातचीत करने को तैयार नहीं था। उसने अब इस विषय में बात करने से साफ़ इन्कार कर दिया। इधर ड्राइवर भी बेचैन था और काम भी था इसलिए हालदार साहब जीप में बैठकर चले गए। दो साल तक हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुज़रते रहे और नेता जी की मूर्ति में बदलते चश्मे को देखते रहे। मूर्ति पर हर बार कोई न कोई चश्मा ज़रूर होता। हालदार साहब को भी वहाँ पहुँचने से पहले यह जिज्ञासा रहती कि आज मूर्ति पर कौन-सा चश्मा होगा ?

एक बार हालदार साहब अपनी आदत के अनुसार चौराहे पर रुके तो देखा कि मूर्ति पर किसी प्रकार का चश्मा नहीं था। उस दिन पान की दुकान के साथ-साथ अधिकांश दुकानें भी बंद थीं। अगली बार हालदार साहब फिर जब चौराहे से गुज़रे तो भी मूर्ति की आँखों पर चश्मा नहीं था। चौराहे पर रुककर हालदार साहब ने पानवाले से पान खाया

और पूछा आज तुम्हारे नेता जी की आँखों पर चश्मा नहीं है ? पानवाला उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान नीचे थूका और सिर झुकाकर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछता हुआ बोला साहब, कैप्टन मर गया। उसकी बात सुनकर हालदार साहब कुछ नहीं पूछ पाए। चुपचाप पान के पैसे चुकाकर जीप में बैठकर चले गए। उन्होंने सोचा यही पानवाला बार-बार उस कैप्टन की हँसी उड़ाता रहता था। अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी जीवन का त्याग कर देने वाले देशभक्तों पर हँसने वाले देश और देशवासियों की कभी उन्नति नहीं हो सकती।

पंद्रह दिन बाद हालदार साहब जब फिर उसी कस्बे से गुज़रे। कस्बे से घुसने से पहले ही उन्हें ख्याल आया कि चौराहे पर सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा अवश्य होगी लेकिन सुभाष चंद्र की आँखों पर चश्मा नहीं होगा। हालदार साहब दुःखी और उदास थे। इसलिए उन्होंने सोचा कि वे आज रुककर पान नहीं खाएँगे। मूर्ति की तरफ़ देखेंगे भी नहीं और सीधे निकल जाएँगे। उन्होंने अपने ड्राइवर से भी कह दिया कि आज चौराहे पर रुकना नहीं, आज बहुत काम है, पान आगे कहीं खा लेंगे। जब हालदार साहब उस चौराहे से गुज़रे तो आदत के अनुसार उनकी आँख मूर्ति की तरफ़ उठ गई। वे ज़ोर से चीखे रोको! उन्होंने जीप रुकवाई और मूर्ति के सामने सावधान अवस्था में खड़े हो गए। उन्हें यह आशा थी कि नेता जी की आँखों पर कोई चश्मा नहीं होगा, लेकिन ऐसा नहीं था। मूर्ति की आँखों पर सरकंडे (गाँठदार सरपत नाम का एक पौधा) से बना हुआ छोटा-सा चश्मा लगा था, जैसे बच्चे बना लेते हैं। यह देखकर हालदार साहब भावुक हो उठे। कस्बे के लोगों की देश-प्रेम की भावना को देखकर उनकी आँखें भर आईं।

बच्चो ! आज हमारा यह पाठ पूर्ण हो चुका है। आशा है कि आपने इसे पूर्णता से समझा होगा। सभी छात्र इस पाठ को पुनः ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे एवं समझेंगे एवं अवतरण पर आधारित दिए प्रश्नोत्तर को पाठ की सहायता से स्वयं करने का प्रयास भी करेंगे।

कक्षा - नौवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ-५ 'नेता जी का चश्मा')

गृहकार्य

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

"नहीं साब वो लँगड़ा क्या जाएगा फौज में ? पागल है, पागल। वो देखो आ रहा है। आप उसी से बात कर लो। फ़ोटो - वोटो छपवा दो उसकी।"

प्रश्न (i) हालदार साहब को पानवाले की कौन-सी बात अच्छी नहीं लगी और क्यों ?

प्रश्न (ii) सेनानी न होने पर भी चश्मेवाले को कैप्टन क्यों कहा जाता था ?

प्रश्न (iii) चश्मेवाले को देखकर हालदार साहब अवाक् क्यों रह गए ? चश्मे वाले का परिचय दीजिए।

प्रश्न (iv) हालदार साहब पानवाले से क्या पूछना चाहते थे और क्यों पानवाले ने उनकी बात पर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की ?

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]